सुरिंदर कैले

बौना

ई—मेल-kailayanu@gmail.com

"तू कितने दिनों से कह रही थी कि मशीन ठीक करवा दो। आज तो जैसे भगवान खुद ही आ गया। यह देख, घर-घर पूछता फिरता मिस्तरी अपने भी आ गया।"

डॉक्टर के पीछे एक बुजुर्ग कारीगर धीरे-धीरे साइकिल खींचता हुआ आ रहा था। उसने साइकिल दीवार के साथ खड़ा किया और अपने औजारों वाली संदूकड़ी कैरियर से उतार कर एक ओर बैठ गया।

"डॉक्टर साहब! आपके गाँव से दो मरीज आए हैं दवाई लेने और ये भुट्टे लाएँ हैं बच्चों के लिए।" कम्पाउडर ने सूचना दी और भुट्टे रसोईघर में रखने चला गया।

डाक्टर का जन्म व पालन-पोषण एक गाँव में हुआ था। पढ़ाई में होशियार होने के कारण, उसके पिता ने उसकी पढ़ाई पर पूरा ज़ोर लगा दिया था, यहाँ तक कि अपना मकान भी रहन रख दिया था। डॉक्टर ने पढ़ाई पूरी कर गाँव में ही दुकान खोल ली थी, पर मरीज कम होने के कारण वह शहर आ गया था। शहर में उसका काम अच्छा चल पड़ा था। उसने न केवल रहन पड़ा मकान ही छुड़वा लिया था बल्कि एक कोठी भी बना ली थी।

"बीबी! मशीन तो काफी पुरानी लगती है?" मशीन के पुर्जों की जांच करते हुए मिस्तरी ने कहा।

"मेरे दहेज की है। इसका कभी-कभार काम पड़ता है, इसलिए पड़ी-पड़ी जाम हो गई।"

"बीबी! तुम्हारा गाँव कौनसा है?"

"डॉक्टर साहब का गाँव तो नंदगढ़ है, नंदगढ़ पशौरा। मेरे मायके बेगोवाल हैं।

"कौनसा बेगोवाल? दोराहे वाला?"

"हाँ। मैं नंबरदार चानन सिंह की पोती हूँ।"

"मेरा गाँव भी बेगोवाल ही है। मेरे पिता नत्थू राम की नंबरदार जी से अच्छी दोस्ती थी।"

"मैं छोटी-सी थी जब पिता जी स्वर्गवास हो गए थे। मैं ज्यादा ननिहाल में ही रही। इसलिए गाँव के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं।" डाक्टरनी ने उसे न पहचान पाने की मजबूरी बताई।

"बताने से ही पता चलता है। नहीं तो चाहे कोई पास बैठा रहे, क्या पता लगता है कि कौन है। ले बहन, मशीन तो तेरी ठीक हो गई।" मिस्तरी ने पुराने कपड़े से हाथ पोंछते हुए कहा।

"कितने पैसे बाबा?" डॉक्टरनी ने मोहभरी आवाज में पूछा।

"तुम तो मेरे गाँव की हो। मैं बहन से पैसे कैसे ले सकता हूँ।"

डॉक्टरनी ने बहुत जोर लगाया, पर मिस्तरी ने मेहनताना लेने से बिल्कुल इनकार कर दिया।

डाक्टरनी ने दवाखाने से वापस आ रहे डॉक्टर को खुशी, सम्मान और अपनत्व भरे मन से कहा,"यह देखो जी! बाबा पैसे नहीं लेता। मेरे मायके का है न इसलिए।"

यह सुनते ही डॉक्टर को पसीना आ गया। उसके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया और वह धड़ाम से पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। मिस्तरी के सामने वह अपनेआप को बौना महसूस कर रहा था। बच्चों के लिए भुट्टे लाने वाले अपने गाँव के मरीजों को वह सैंपल वाली दवाइयाँ भी बेच आया था।

हिन्दी अनुवाद : श्याम सुन्दर अग्रवाल

सुरिंदर कैले : पंजाबी साहित्य में एक जाना पहचाना नाम हैं। कैले का जहां पंजाबी लघुकथा में बड़ा योगदान है, वहीं वह पिछले 53 वर्षों से लगातार 'अणु' जैसा परचा निकाल रहे है । पंजाबी में अब तक इनके पांच लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा इन्होंने लगभग एक दर्जन लघुकथाएँ, काव्य संग्रह और नाटक पुस्तकों का संपादन किया है। इनका एक लघुकथा संग्रह पंजाबी से हिंदी भाषा में अनूदित हो चुका है।